RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 74, अंक : 35 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 19 नवम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-74, अंक : 33, 16-19 नवम्बर 2017 तदनुसार 4 मार्गशीर्ष सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हम ज्ञानी का सङ्ग करें

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चमविद्वांसो विदुष्टरं सपेम।
स यक्षद्विश्वा वयुनानि विद्वान्प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत्।।

-ऋ० ६।१५।१०

शब्दार्थ-हम **अविद्वांसः** = अविद्वान् **तम्** = उस **सुप्रतीकम्** = सुन्दर प्रतीत होने वाले **सुदृशम्** = उत्तम द्रष्टा **स्वञ्चम्** = उत्तम चाल-ढाल वाले, श्रेष्ठाचार वाले, सुपूज्य **विदुष्टरम्** = अपने से अधिक विद्वान् को **सपेम** = प्राप्त हों, मिलें, सङ्ग करें। **सः** = वह **विद्वान्** = विद्वान् **विश्वा** = सम्पूर्ण **वयुनानि** = ज्ञानों और कर्मों को, विचारों और आचारों को **यक्षत्** = परस्पर सङ्गत करे। वह **अग्निः** = अग्रणी, ज्ञानी **अमृतेषु** = अविनाशियों में, जीवों में **हव्यम्** = ग्रहण करने योग्य पदार्थ का **प्रवोचत्** = भली प्रकार उपदेश करे।

व्याख्या-मन्त्र में ज्ञानी के सङ्ग करने का उपदेश है। ज्ञानी के विशेषण विशेष मनन करने योग्य हैं-

(१) सुप्रतीक-ज्ञानी सुन्दर आकार-प्रकार वाला हो। सुन्दर प्रतीत हो, अर्थात् उसका अङ्ग-भङ्ग न हो। वह विकराल न हो। दुबला-पतला, मरियल या सर्वथा बेडौल न हो। वरन् सुप्रतीक हो, सुन्दर मूर्त्तिवाला हो। बाह्य आकार का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है और सबसे प्रथम पड़ता है, अतः दूसरों को उपदेश देने वाला अपने आकार-प्रकार का विशेष विचार रखे।

(२) सुदृक्-स्वयं सुद्रष्टा हो। शास्त्र का अच्छा ज्ञानी हो। जिस पदार्थ को देखे, अवहेलना और बेपरवाही से न देखे, वरन् सूक्ष्मदृष्टि से निरीक्षण करे। यदि उपदेशक या अध्यापक में यह गुण न हो तो वह अच्छा उपदेशक या अध्यापक नहीं बन सकता।

(३) स्वञ्च-उपदेशक, प्रचारक की प्रत्येक चाल-ढाल का लोग सावधानता से अवलोकन करते हैं। एक प्रचारक बाह्य आकार में उत्तम है, ज्ञान में भी गरीयान् है, किन्तु आचार में हीन है तो उसे सफलता मिल ही नहीं सकती। सारांश यह कि उपदेशक को सुन्दर, उत्तम ज्ञानी तथा श्रेष्ठ आचार-व्यवहार वाला होना चाहिए।

(४) विदुष्टर = विद्वत्तर। उपदेशक जिज्ञासु की अपेक्षा विदुष्टर= अधिक विद्वान् न होगा तो जिज्ञासु का समाधान न कर सकेगा।

स यक्षद्विश्वा वयुनानि= वह सभी ज्ञानों व कर्मों को सङ्गत करे, अर्थात् उसके ज्ञान-कर्म एक-दूसरे के विरोधी न हों और **प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत्** = वह जीवों के निमित्त हव्य=ग्रहण करने योग्य पदार्थ का उपदेश करे।

सामान्य भोग शरीर के लिए है, वह तो पशुओं को भी प्राप्त है। प्राकृतिक भोग की प्राप्ति के लिए विशेष उपदेश की आवश्यकता नहीं हैं। वह तो पशुओं को भी प्राप्त है, उसके लिए उन्हें कोई उपदेश देने नहीं जाता, प्रत्युत नैसर्गिक बुद्धि से वे उसे प्राप्त कर लेते हैं। हाँ, आत्मिक जीवन के लिए अपेक्षित सामग्री उपदेश के बिना ज्ञात नहीं हो सकती। उपदेश करना हो तो उसका करना चाहिए।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः।
सवितारं नृचक्षसम्।। **-ऋ० १.२२.७**

भावार्थ-सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी परमेश्वर सब मनुष्यों को उनके कर्मों के अनुसार अनेक प्रकार का धन देता है। जिस धन से मनुष्य अपने लोक और परलोक को सुधार सकते हैं। ऐसे धन को मद्य, मांस-सेवन और व्यभिचारादि पाप कर्मों में कभी नहीं लगाना चाहिये, किन्तु धार्मिक कामों में ही खर्च करना चाहिये, जिससे मनुष्य का यह लोक और परलोक सुधर सके।

सखाय आनिषीदत सविता स्तोम्यो नु नः।
दाता राधांसि शुम्भति।। **-ऋ० १.२२.८**

भावार्थ-मनुष्यों को परस्पर मित्रता के बिना कभी कोई सुख नहीं प्राप्त हो सकता, इसलिए सब मनुष्यों को योग्य है कि, एक दूसरे के मित्र होकर इकट्ठे बैठें और उस जगत्पिता के गुण गावें क्योंकि वही जगदीश्वर, सबको अनेक प्रकार के उत्तम से उत्तम धनों का दाता और शोभा का भी देने वाला है। इससे हमें उस दयामय पिता की सदा प्रेम से भक्ति करनी चाहिये, जिससे हमारा लोक परलोक सुधरे।

आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे।
सत्यसवं सवितारम्।। **-ऋ० ५.८२.७**

भावार्थ-जगत् का उपास्य देव जो श्रेष्ठ सन्त जनों का रक्षक वा पालक, सच्चाई का पक्षपाती, जिसकी आज्ञा सच्ची है, और जो सारे जगतों का उत्पन्न करने वाला है, आज हम अनेक वेद के पवित्र मन्त्रों से उस जगत् पिता की स्तुति करते हैं, वह जगत्पिता परमात्मा, हम पर प्रसन्न होकर हमें सच्चा भक्त बनाये।

अग्निहोत्रविषयक चर्चा

ले०-डॉ. सुशील वर्मा मास्टर मूलचन्द वर्मा गली फाजिल्का-152123

अग्निहोत्र में आचमन व अंग स्पर्श के पश्चात् दीपक जलाया जाता है। दीपक प्रज्ज्वलित करते समय तीन महाव्याहृतियों का उच्चारण किया जाता है। ''ओ३म् भूर्भुवः स्वः'' (गोभिल गृह्य सूत्र (1/1/11) सबसे पहले ओ३म् का उच्चारण अर्थात् परमात्मा का निज नाम जिसमें सभी नाम और उनके अर्थ समाहित हो जाते हैं, अथवा वो सबका रक्षक ''अवति रक्षादिकं करोति इति ओ३म''

भू :-इति प्रजापति इमामजनयत् (शतपथ 2/1/4/11)

प्रजापति परमात्मा जिसने इस सृष्टि को रचा, अथवा तो 'भू'-सत्तायाम्, जो सत् स्वरूप है, जो सदा सर्वदा वर्तमान रहता है। अथवा तो 'भू'-इति वै प्राणः। भूः प्राण को कहते हैं, जो प्राण स्वरूप होने के कारण सबको जीवित रखने का हेतु है। जो प्राणों से भी प्रिय है, वह परमात्मा 'भू' संज्ञक है।

भुवः-''भवन्ति यस्मिन् इति'' अर्थात् जिसके आश्रय में सभी जड़ चेतन उत्पन्न होते हैं। जो सबका आश्रय है। भुवः 'अपान' को भी कहते हैं। जो सब दुःखों को दूर करता है। दुःखहर्त्ता परमात्मा भुवः संज्ञक है।

स्वः-सुख। सुख आनन्द से युक्त वह परमात्मा आनन्द स्वरूप है आनन्द दाता है। अथवा तो स्वः 'व्यान' है-'स्वरित व्यान।' अर्थात् जो नानाविध जगत में व्याप्त होकर सबको धारण रखता है।

इस प्रकार अध्यात्म में 'भूः भुवः स्वः' परमात्मा के वाचक हैं। वही क्रमशः उत्पत्तिकर्त्ता, स्थितिकर्त्ता एवं प्रलयकर्त्ता परमेश्वर है वही ब्रह्मा, विष्णु, महेश। वही GOD-Generator, Operator, Destructor वही, सत चित्त, आनन्द-सच्चिदानन्द। वही प्राणों से प्यारा, दुःखहर्त्ता, सुखप्रदाता।

शतपथ (8/7/4/5) का वचन है कि ये व्याहृतियाँ क्रमशः भूमि, अन्तरिक्ष और द्युलोक की वाचक हैं। अग्न्याधान से पूर्व इन व्याहृतियों द्वारा तीनों लोकों का ध्यान आवश्यक है, क्योंकि इन तीनों लोकों में अग्नि का वास है।

1. पृथिवी पर पार्थिव अग्नि
2. अन्तरिक्ष में विद्युत
3. द्यौ में सूर्य रूपा

तैन्तिरीय आरण्यक/उपनिषद् में इन्हें क्रमशः भूलोक, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक। अग्नि, वायु, आदित्य। ऋक्, यजुः, साम। प्राण, अपान, व्यान कहा गया है।

इस प्रकार चिन्तन करते हुए, परमात्मा का ध्यान करते हुए कि हे प्रभो! आप ने दीपक जलाया है। सूर्य रूप में जो कि इस विशालकाय पृथिवी से तेरह लाख गुणा बड़ा है। अपनी क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार हम भी दीपक जलाते हैं, साम्य के लिए समता के लिए। इस दीपक को ईशान कोण में रखा जाता है।

हे प्रभो! आप ज्योतियों की ज्योति हो ''ज्योतिषां ज्योतिरेकं'' प्रकाशकों के प्रकाशक हो। मैं तुच्छ ही सही किन्तु अपने बलबूते के अनुसार अपने सामर्थ्य अनुरूप दीपक बनकर आपके प्रकाश को जग में फैलाऊँगा। हे परमपिता परमात्मा मैं वामन से विराट हो जाऊँ। अथवा तो तीनों लोकों में विद्यमान अग्नि का प्रतीक रूपी इस दीप को प्रज्ज्वलित करता हूँ जिससे तीनों लोकों का प्रकाश मेरे अन्दर प्रवेश हो सके। ''यथा ब्रह्माण्ड तथा पिण्डे'' सूर्य चन्द्रादि ब्रह्माण्ड में प्रकाशित हो रहे हैं। इसी प्रकार मेरे शरीर में भी आप प्रकाश भर दो, ज्ञान का प्रसार कर दे हे ज्ञानवान प्रभो! हमको भी ज्ञान दे दो। हे भगवन्! ये सब आप से ही प्रकाशित हो रहे हैं। जिस प्रकार से तीनों लोकों में अग्नियाँ प्रकाशित हो रही हैं, मेरे अन्दर भी सद्गुण रूप दिव्यता, अन्तः-प्रकाश प्रसारित व प्रकाशित हो।

''न तत्र सूर्यो भाति, न चन्द्रतारकम्, नेमोविद्युतो भाति कुतोऽयमग्नि

तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्, तस्य भासा सर्वमिद'' विभाति।।

(श्वेताश्वन्तरोपनिषद्)

इन्हीं कारणों से अग्न्याधान का प्रारम्भ भूः भुवः स्वः व्याहृतियों से किया जाता है। यही है स्वामी जी के विनियोग की विलक्षणता।

अग्निप्रदीपनः-अग्न्याधान के पश्चात् अग्निप्रदीपन के लिए स्वामी जी ने यजुर्वेद (5/54) के मन्त्र का विनियोग किया है। ''ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।''

अर्थात् ओ३म् उच्चारण के साथ अग्नि प्रदीप्त करता हूँ। हे अग्ने! तू भली भांति प्रदीप्त हो, प्रत्येक समिधा को प्रज्ज्वलित करती हुई जागृत अथवा पर्याप्त ज्वालामयी हो। तू और यह यजमान इष्ट और पूर्व कर्मों को मिलकर सम्पादित करो। उस उत्कृष्ट भव्य एवं अत्युच्च यज्ञशाला में उत्कृष्ट यज्ञमण्जप में सब विद्वान् और यज्ञकर्त्ता मिलकर बैठें।

यहाँ पुरोहित उद्बोधन कर रहा है ''उद्बुध्येस्वाऽने''-३८, श्रद्धा से ३४। प्रतिजागृहि-जगाओ, किसे जगाओ, अग्नि को, चेतन अग्नि को। वह चेतन अग्नि कौन सी है? वह चेतन अग्नि आत्मा है, जो बुद्धि से सम्बन्धित है। ज्ञान से सम्बन्धित है।

उसे क्यों जगाएँ? उद्देश्यपूर्ति के लिए। कौन सा उद्देश्य?

उद्देश्य है अन्धकार का नाश। यह कैसे हो पाएगा? अग्नि-आत्मा के चेतन हो जाने पर पापरूपी कृष्ण धूम भागता हुआ दृष्टिगोचर होता है। यज्ञ किया ही जाता है अन्धकार दूर करने के लिए। अन्धकार शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक है, अर्थात् आधिदैविक आधि-भौतिक एवं आध्यात्मिक।

यज्ञ का देवता इन्द्र है। आधिदैविक जगत में सूर्य ही इन्द्र है जो अन्धकार को सूर्य उदय होते ही भगा देता है। आधिभौतिक जगत में राजा इन्द्र है अर्थात् यज्ञपति जो दुष्प्रवृतियों को भगा दे। आध्यात्मिक जगत में आत्मा इन्द्र है जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, जो हमेशा अन्तःकरण में अंधेरा किए रखते हैं और उन्हें वहाँ से दूर भगाकर उजाला कर देता है। साधक इन्द्रियों का दमन करता है। मन से पुकार रहा है। यज्ञपति बनकर-'उद्बुध्यस्वाग्ने' और तब जब आत्मा जाग जाए तो, कौन सी इच्छा शेष रह जाती है। क्योंकि यज्ञ का एक नाम ''इष्टाकामधुक'' है। यज्ञ का एक मात्र उद्देश्य है अन्तःकरण की शुद्धि। इष्टापूर्वे का अर्थ स्वामी जी के शब्दों में इष्ट का अर्थ अभीष्ट सुख, विद्वानों का सत्कार, ईश्वर का आराधन संगतिकरण और सत्यविद्यादि दान। 'पूर्ते का अर्थ पूर्ण बल, ब्रह्मचर्य' विद्यालंकरण, पूर्व यौवन और साधन उपसाधन की प्राप्ति ''(यजुर्वेद भाष्य)''।

अग्नि और यजमान दोनों मिलकर इष्ट और पूर्ते की पूर्ण करें। अग्नि यज्ञाहुति को द्युलोक पहुँचाकर वृष्टि आदि का कार्य सम्पन्न करें और यजमान परोपकार आदि कृत्यों को करता जाए। दोनों ही मिलकर ''संसृजेथाम्'' अर्थात् सम्पादन करें। तत्पश्चात पुरोहित सब देवों का आह्वान करता है कि आप सभी यजमान के साथ बैठो 'देवाः' का अर्थ है दिव्य गुणों वाले विद्वान ''विद्वाषों हि देवाः''।

अतः यह स्पष्ट है कि यज्ञ केवल भौतिक क्रिया ही नहीं अपितु आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यज्ञ का उद्देश्य है-आत्मग्नि को प्रज्ज्वलित करना, प्रकाशित करना। यज्ञाग्नि संकल्प का प्रतीक है। संकल्प यही कि आत्मा जागृत हो, आध्यात्मिक और सामाजिक कर्म (इष्टापूर्ते) सम्पन्न हो, और सभी के साथ मिलकर वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान करें। विद्वजनों का, माता पिता का, आचार्यों का, प्राकृतिक जड़ देवताओं आदि का सब के साथ मिल जुलकर अग्नि को प्रज्ज्वलित रखें।

वैदिक ऋचाओं द्वारा आत्मा को आहुत कर देना, सर्वस्व समर्पित कर देना, लोक निर्माण एवं लोक कल्याण के लिए स्वार्थ को त्याज्य स्वीकार करना ही यज्ञ है। इसका कारण है यज्ञ के तीनों तत्त्वों की उपस्थिति। यजमान जब जीवन यज्ञ से मानव जाति को सुगन्धित करने लगता है तो वह देवत्व की कोटि में आ जा जाता है। मन, वचन व कर्म से सतत समर्पण ही यज्ञ है। यही है ''यज्ञो वैश्रेष्ठतमं कर्म'' की परिभाषा यही है उसकी सुरभि।

सम्पादकीय

पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं का हार्दिक धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा पंजाब के तत्वावधान में पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर. के. आर्य कॉलेज नवांशहर में 5 नवम्बर 2017 को आर्य समाज नवांशहर के संयोजकत्व में एक भव्य आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस महासम्मेलन में पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं का भरपूर सहयोग मिला। यह भव्य समारोह अपने आप में एक ऐतिहासिक था। इस भव्य समारोह की शोभा देखते ही बनती थी। लोगों में एक अलग ही उत्साह दिखाई दे रहा था। आर्यों के विशाल जनसमूह की भव्य उपस्थिति से पण्ड़ाल का भव्य दृश्य देखने योग्य था। इस समारोह को सफल बनाने के लिए पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं का भरपूर सहयोग मिला है। इस भव्य आर्य महासम्मेलन से लोगों में नई ऊर्जा का संचार हुआ है तथा अपने संगठन की शक्ति अहसास हुआ है। यह महासम्मेलन लोगों में आशा की किरण जगा गया है कि अगर इसी प्रकार से कार्य किया गया तो निश्चय ही आर्य समाज को एक नया रूप मिलेगा और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का तथा वेद की पवित्र वाणी का घर-घर में प्रचार होगा। आर्य समाज का भी यही उद्देश्य है कि लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता और अपनी मातृभूमि के प्रति जागरूक हों। यह आर्य महासम्मेलन आर्यों में अपनी एक अलग छाप छोड़ गया है तथा सभी यहाँ से एक नई शक्ति लेकर गए हैं। यह सब कार्य कोई भी अकेला नहीं कर सकता। इसके लिए सबके सहयोग की आवश्यकता होती है और मुझे यह देखकर अत्यन्त खुशी है कि पूरे पंजाब की आर्य समाजों, शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यों ने अपना पूरा सहयोग इस महासम्मेलन की सफलता के लिए दिया है। इसके लिए सभी आर्य समाजों के अधिकारी, सदस्य तथा अन्य कार्यकर्ता बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इस भव्य आर्य महासम्मेलन को मनाने का यही उद्देश्य था कि लोगों में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज के प्रति जागरूकता बढ़े। समाज से कुरीतियों का नाश हो, लोग पाखण्ड़ और अन्धविश्वास में न भटकें, धर्म के नाम पर होने वाला व्यवसाय बन्द हो। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का हर संभव प्रयास है कि आर्य समाज के लक्ष्य और उद्देश्य की प्रति आम जनता को जागृत किया जाए। इसके लिए सभा में वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। पंजाब प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्तों के लोग भी सभा कार्यालय में प्रचारार्थ साहित्य लेने के लिए आते हैं। अगर सभी आर्य सिद्धान्तों के अनुसार चलें तो समाज से पाखण्ड़, अन्धविश्वास को समाप्त किया जा सकता है। इसके लिए लोगों के अन्दर अपने धर्मग्रन्थों के प्रति, वेदों को पढ़ने के प्रति भावना पैदा करनी होगी। आर्य समाज के तीसरे नियम में महर्षि दयानन्द जी ने वेदों की महिमा का संदेश देते हुए लिखा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। हमें विचार करना है कि हम आर्य लोग उस परम धर्म का पालन कर रहे हैं या नहीं। अगर हम उस परम धर्म का पालन रकना चाहते हैं तो हमें लोगों का वेदों के पढ़ने के लिए जागरूक करना होगा। वेद की शिक्षाओं के आधार पर ही विश्व का कल्याण हो सकता है। वेद की शिक्षाएं सार्वभौम हैं किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है। इसीलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा वेदों के सैट अर्थ सहित आधे मूल्य पर लोगों का उपलब्ध कराए जाते हैं। लोगों में वेदों के विषय में जो भ्रान्तियां फैली हुई हैं, उन भ्रान्तियों का निराकरण तभी होगा जब वे स्वयं वेदों को देखेगें, पढ़ेगें व उसके अनुसार जीवन में कर्म करेंगे। इसके साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सभी वेद प्रचार के प्रति संकल्पबद्ध संस्थाओं एवं गुरूकुलों को हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन देती रहती है ताकि वेद प्रचार का कार्य निरन्तर अबाध गति से चलता रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निरन्तर आगे बढ़ रही है। 5 नवम्बर 2017 को जिस उत्साह और लग्न के साथ पंजाब की समस्त आर्य समाजों ने बढ़-चढ़ कर आर्य महासम्मेलन में भाग लिया उससे सभी आर्यों को एक प्रेरणा मिली है। इस अवसर पर पंजाब भर से आए हुए आर्यजनों का उत्साह देखने योग्य था। सारा पण्ड़ाल खचाखच भरा हुआ था और वैदिक जयघोषों से पण्ड़ाल गुजांयमान हो रहा था। संगच्छध्वं संवदध्वं की भावना से ही आर्य समाज की उन्नति हो सकती है, आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। इस भावना का सम्पूर्ण दृश्य वहां पर देखने को मिला। लोकैषणा को त्याग कर निस्वार्थ भाव से किया गया कार्य ही समाज के लिए फलदायक सिद्ध होता है। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा सभी कार्य आपसी सहयोग और उत्साह के साथ ही सम्पन्न होते हैं। इस आर्य महासम्मेलन में आकर आप लोगों से अपने सहयोग, उत्साह एवं समर्पण का परिचय दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आप सबके सहयोग से आगे भी इसी प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करती रहेगी और वेद प्रचार के कार्यों को इसी प्रकार जारी रखेगी।

अंत में मैं सभी आर्य समाजों, एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस भव्य आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। इस कार्यक्रम की सफलता सभी आर्यों की सफलता है। सभा आप सबके सहयोग से ही आगे बढ़ रही है। सभी आर्यजनों ने जिस उत्साह और उमंग के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया उसके लिए वे सभी धन्यवाद के पात्र है। आगे भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आपसे इसी प्रकार के सहयोग की कामना करती है। सभी आर्य समाजें एकजुट होकर वेद प्रचार के कार्य में लग जाएं, महर्षि दयानन्द के सन्देश को घर-घर पहुंचाने का प्रयास करें, सभी आर्यजन आर्य समाज के दस नियमों का पालन करते हुए आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें। सभा के द्वारा आपका हर सम्भव सहयोग किया जाएगा। वेद प्रचार करना हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। इस लक्ष्य को लेकर सभी आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्र में वेद प्रचार का कार्य करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

हार्दिक धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर.के.आर्य कालेज नवांशहर में 5 नवम्बर 2017 को हुये आर्य महासम्मेलन में सहयोग देने के लिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं ने सहयोग दिया। लेकिन फिर भी पिछले अंक में कुछ नाम भूल गये जिनका इस बार विवरण दिया गया है। इस सम्मेलन में जिन आर्य समाजों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया उनमें आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर, आर्य समाज बस्ती बाबा खैल जालन्धर, आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर, आर्य समाज गांधी नगर-2 जालन्धर, आर्य समाज औड़, आर्य समाज राहों, आर्य समाज होशियारपुर रोड जालन्धर, आर्य समाज सुल्तानपुर लोधी, आर्य समाज कपूरथला, आर्य समाज कमालपुर होशियारपुर, आर्य समाज नया नंगल, आर्य समाज नंगलटाउनशिप, आर्य समाज मुकेरियां। हम इन आर्य समाजों का भी धन्यवाद करते हैं। **व्यवस्थापक**

सविता पश्चात्तात् सविता पुरस्तात्।
सवितोत्तरात्तात् सवितादरात्तात्।
सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता
नो रासतां दीर्घमायुः।। **-ऋ० १०.३६.१४**

भावार्थ-जगत् पिता परमात्मा, पूर्वादि सब दिशाओं में हमारी रक्षा करे और हमें मनोवांछित पदार्थ देता हुआ दीर्घ आयु वाला बनावे। जिससे हम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन चार पुरुषार्थों को प्राप्त होकर सदा सुखी हों।

पुष्ट व कर्मशील नारी से प्रगति संभव

ले०-श्री अशोक आर्य

नारी अथवा स्त्री अपने परिवार को सदा आगे ले जाने के लिए प्रयत्नशील रहती है। परिवार की प्रगति ही उसका एक मात्र ध्येय होता है। इस ध्येय की प्राप्ति के लिए अन्य उपायों के अतिरिक्त नारी का शिक्षित होना भी आवश्यक है। शिक्षित नारी परिवार की प्रगति का कारण होता है। उसका ध्येय ही परिवार की प्रगति होता है, जिस पाने के लिए वह सदा कुछ न कुछ उपाय करती ही रहती है। शिक्षित नारी साधारण नारी की अपेक्षा अधिक सरलता से प्रगति के उपायों को समझती है तथा उन्हें अपना कर परिवार को आगे ले जाती है। इसलिए नारी के लिए उच्च शिक्षित होना, वेदादि शास्त्रों का नियमित स्वाध्याय करना अति आवश्यक हो जाता है। यजुर्वेद ने इस सम्बन्ध में उपदेश करते हुए कहा है कि-

घृतेनात्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।

घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।। यजुर्वेद १२.४४।।

घी आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन

मन्त्र कहता है कि घृतादि पौष्टिक पदार्थों के सेवन से अपने शरीर को स्वस्थ और पुष्ट बनाना चाहिये। इसका भाव क्या है? इस का अवलोकन करते हुए। हम पाते हैं कि विश्व का कोई भी उत्तम कार्य करना हो तो उसको करने के लिए, उसकी सफलता के लिए उसकी ठीक से सम्पन्नता के लिए शरीर का स्वस्थ होना, पुष्ट होना आवश्यक होता है। स्वस्थ शरीर ही पुरुषार्थ के लिए कर्म कर सकता है अन्यथा वह ठीक से गतिशील नहीं होता और ठीक से पुरुषार्थ नहीं कर पाता। जब शरीर स्वस्थ नहीं है, ठीक से पुरुषार्थ करने के लायक नहीं है तो वह परिवार के कल्याण के लिए आगे कैसे आ सकता है? अर्थात् नहीं। इसलिए ही मन्त्र उपदेश कर रहा है कि सर्वप्रथम स्वयं को स्वस्थ व पुष्ट करने के लिए घी आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन किया जावे। इन के सेवन से स्वयं को स्वस्थ व पुष्ट बनाया जावे।

कर्मशील

मन्त्र आगे उपदेश करता है कि घी आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन करते हुए न केवल स्वयं को ही पुष्ट किया जावे अपितु अपने परिवार को भी घी आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन करा कर उन्हें भी स्वस्थ व पुष्ट बनाया जावे। हम जानते हैं कि एक पुष्ट व्यक्ति ही कर्मशील होता है। एक पुष्ट व स्वस्थ व्यक्ति ही स्वाध्याय कर सकता है। वह सब प्रकार की शिथिलताओं से ऊपर होकर गूढ़ ज्ञान को भी सरलता से समझ सकता है। जबकि रोगों से घिरा हुआ व्यक्ति तो सदा सुस्त सा, रुआं सा ही रहता है। वह स्वयं को तो संभाल नहीं सकता, अपने आश्रितों को क्या संभालेगा। दिन रात वह अपने कष्ट को स्मरण करता हुआ रोता रहता है, किसी को हंसना क्या सिखावेगा?

इसलिए ही मन्त्र ने उपदेश किया है कि एक पठित नारी सदा घी आदि पदार्थों का सेवन करते हुए स्वयं को तो स्वस्थ व पुष्ट बनावे ही, इसके साथ ही अपने परिवार के अन्य लोगों को भी घी आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन कराते हुए उन्हें भी स्वस्थ बनावे तो निश्चय ही उसके परिजन भी परिश्रमी, पुरुषार्थी बनेंगे तथा इस माता के दिए वेद ज्ञान को सरलता से समझ कर इसे अपने जीवन का भाग बना कर स्वयं तो उत्तम मार्ग पर जावेंगे ही अन्यों को भी इस मार्ग पर अपने साथ ले जाने में सफल होंगे।

इसलिए मन्त्र कहता है कि यह नारी स्वयं पौष्टिक पदार्थों का सेवन करते हुए बुद्धिमती और कर्मशील बने। साथ ही अपने परिवार के अन्य सदस्यों की बुद्धि बढ़ाने के तथा उन्हें भी कर्मशील बनाने के लिए सदा उपाय करती रहे। जब नारी अपने परिवार में इस प्रकार के प्रयोग करती है तो निश्चय ही परिवार के सब सदस्य बुद्धियों के स्वामी होकर कर्मशील बनते हैं। सदा किसी न किसी कार्य में अपने आप को व्यस्त रखते हैं। उनके इस पुरुषार्थ के परिणाम स्वरूप परिवार प्रगति के पथ का पथिक बन जाता है। युक्त व कर्मशील वैदिक कोष के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि धी के दो अर्थ होते हैं, प्रथम कर्म तथा दूसरा बुद्धि। इस प्रकार ही पुरु का अर्थ करते हुए निघंटु के माध्यम से बताता है कि इसका भाव है-बहु जब हम पुरुन्धी का समग्र भाव निकालते हैं तो यह भी उक्त मन्त्र के अनुरुप ही आता है अर्थात् स्त्रियों को बहुत बुद्धिमती होना चाहिए तथा इन्हें आलस्य तथा प्रमाद से सदा दूर रहना चाहिए। कभी आलस्य या प्रमाद इनमें होना ही नहीं चाहिए। यदि हो तो इसे त्यागना होगा। उसे आलस्य व प्रमाद को त्याग कर बहुत कर्म करने वाली होना होगा, तब ही वह स्वयं पुष्ट रहते हुए समग्र परिवार को भी पुष्ट रखते हुए बुद्धियों से युक्त व कर्मशील बन सकेगी।

इस प्रकार मन्त्र कहता है कि एक नारी परिवार को आगे ले जाने वाली होती है किन्तु परिवार को आगे ले जाने की विधि कर्मशीलता तथा बुद्धि को अपने में पैदा करने के लिए उस के लिए आवश्यक है कि वह घृतादि पुष्टिकारक पदार्थों का स्वयं तो सेवन करे ही साथ ही वह अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी इन पदार्थों का सेवन करावे। इस प्रकार वह स्वयं भी कर्मशील तथा पुरुषार्थी बने और अपने परिवार के सब सदस्यों को भी बनावे। इस स्वस्थ शरीर से कर्म व पुरुषार्थ करते हुए परिवार को सब मिलकर आगे ले जावें।

स्वाध्यायशील माता को ब्रह्मचारी भी सम्मान दें

आज नारी शिक्षा का महत्त्व विश्व के प्रत्येक देश में स्वीकार किया जा रहा है। निर्माण करने वाली नारी ही विश्व को स्थापित कर सकती है। इस सम्बन्ध में यजुर्वेद के अंतर्गत १४वें अध्याय में अनेक स्थलों पर वर्णन मिलता है। स्त्री शिक्षा के गुणों का गान करने वाले इन मंत्रों में से इस अध्याय का दूसरा मंत्र स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विशेष महत्वपूर्ण है। यह मन्त्र आदेश देता है कि नारी के सौभाग्य के पान के लिए अर्थात् नारी के सौभाग्य की रक्षा के लिए भी नारी शिक्षा का होना अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षा से अभिप्रायः वेदाध्ययन से ही होता है। अतः मन्त्र कहता है कि यदि नारी वेद का स्वाध्याय अंतर्मन से करती है तो निश्चय ही उसे सौभाग्य की प्राप्ति होती है। आओ मन्त्र का अवलोकन करें:-

कुलायिनी घृतवती पुरन्धिः स्योने सीद सदने पृथिव्याः। अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्त्विमा ब्रह्म पीपिहि सौभागायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा।। यजुर्वेद १४.२।।

सुख पूर्वक रहने का अवसर

यह मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हे देवी! हे सौभाग्यशाली नारी! तू कुल की उन्नति करने वाली है तथा कुल की उन्नति के लिए सदा चेष्टा करने वाली, सदा पुरुषार्थ करने वाली है। इतना ही नहीं अपने तथा अपने परिजनों के बल व शक्ति को बढ़ाने के लिए तू स्वयं तो उत्तम प्रकार के घी आदि का प्रयोग करती ही है। इसके साथ ही साथ इस उत्तम घी आदि पदार्थों को अपने परिजनों में भी बाँट देती है ताकि वह सब परिजन भी इस उत्तम घी आदि के प्रयोग से स्वस्थ व सुशील बन सकें। हे माते! तू स्नेह तथा दीप्ती से युक्त है। सदा सब के साथ स्नेह करते हुए वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से दीप्त रहने वाली है। इससे हे देवी! तू सब प्रकार के सुखों की वृद्धि वाली होकर सदा कर्म में विश्वास रखने वाली होने के नाते सदा कुछ न कुछ कर्म करने वाली सदा पुरुषार्थ करने वाली होने के कारण ही हे माते! तूने इस पृथ्वी पर जो गृह, जो घर बनाया है, जो निवास के लिए स्थान बनाया है, उस निवासस्थान पर स्वयं भी सुख पूर्वक निवास कर और अपने परिजनों को भी गृह स्वामिनी सदा वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय करावे।

मन्त्र इस के साथ ही उपदेश कर रहा है कि हे देवी! अपने सौभाग्य के लिए अर्थात् अपने सौभाग्य की निरंतर वृद्धि के लिए, सदा सुखी रहने के लिए, इसके साथ ही सदा धर्म के ज्ञान की प्राप्ति में लिप्त रहने के लिए वेद के इन मन्त्रों का सदा पान करने के लिए अध्ययन व अध्यापन रूप अर्थात् स्वयं स्वाध्याय करते हुए अन्य परिजनों को भी स्वाध्याय कराते हुए इस स्वाध्याय रूपी यंत्र के नेता स्वरूप अध्यापक अथवा उपदेशक स्वरूप तेरे परिजन सब स्त्री तथा पुरुष लोग मिल कर तुझे इस गृहस्थान पर प्रतिष्ठित करे अर्थात् तुझे सदा इस गृह की स्वामी समझते हुए, स्वीकार करते हुए इस में स्थापित करें। इससे स्पष्ट संकेत ही नहीं आदेश दिया गया है कि गृह स्वामिनी देवी सदा वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय करते हुए अपने

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्यों का मूल निवास स्थान

ले०-शिवनारायण उपाध्याय शास्त्री नगर, दादाबाड़ी-कोटा

गतांक से आगे

(3) इन विद्वानों की धारणा है कि यही स्थान (मध्य एशिया) सभ्य जीवन का प्राचीनतम केन्द्र रहा है।

(4) सभी भाषाओं में पाये जाने वाले शब्दों के अध्ययन के आधार पर ही मध्य एशिया आर्यों का मूल निवास स्थान लगता है।

(5) मध्य एशिया में बोगाज कोई में कुछ सन्धि पत्रों के अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें वैदिक देवताओं (इन्द्र), वरूण मित्र) के रूपान्तरित नाम मिले हैं।

(6) मिश्र में एल अमनी नामक स्थान पर प्राप्त मिट्टी के कुछ अंश इस बात के प्रतीत हैं कि ईरानी तथा भारतीय कुछ समय तक ईरान में साथ रहे थे।

(7) एडवर्ड मेयर ने इस स्थान का समर्थन करते हुए पामीर के पठार के आस-पास आर्यों का मूल स्थान तय किया। उसने अपने समर्थन के पक्ष में लिखा है कि यूरोपीय भाषाओं में हिट्टाइट भाषा प्राचीनतम है। सन् 1900 बी.सी. में केपडोशिया में रहने वाले हिट्टी भाषी थे और यह प्रदेश मध्य एशिया के समीप ही है।

बैन्डेस्टीन ने भी भाषा विज्ञान के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि इन्डो-यूरोपियन आर्य आरम्भ में एक स्थान पर लगातार सम्मिलित रूप से रहते थे और उन्होंने यूराल पर्वत का दक्षिणी भाग निर्धारित किया है। उनका कहना है कि आर्य लोग यही से भारत तथा ईरान में गए थे।

मीमांसा-आर्य पहले मध्य एशिया में निवास करते थे और वहाँ से ईरान भारत तथा यूरोप में पहुंचे थे। कुछ इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं है। उनका कहना है कि आर्यों के प्रदेश की भूमि अत्यन्त उर्वरा तथा जल से परिपूर्ण थी परन्तु मध्य एशिया में इन दोनों बातों का अभाव है। इसके साथ ही आर्यों के आदि ग्रन्थ वेद में मध्य एशिया का उल्लेख भी नहीं मिलता है। तीसरे इस धारण के पुष्टि कर्त्ता यह बताने का प्रयास भी नहीं करते कि आर्य लोग अपने मूल निवास स्थान में इतनी कम संख्या में क्यों हैं?

उत्तरी ध्रुव-आर्य लोग मूल रूप से उत्तरी ध्रुव प्रदेश के निवासी थे। इस धारणा के प्रतिपादक बाल गंगाधर तिलक हैं। उन्होंने अपनी धारणा की पुष्टि में निम्न तर्क रखे-

(1) ऋग्वेद में एक सूक्त है जिसमें दीर्घकालीन उषा की स्तुति की गई है और यह दीर्घकालीन उषा ध्रुव पर ही होता है।

(2) महाभारत में सुमेरू पर्वत का वर्णन करते हुए 6 मास का दिन और 6 मास की रात्रि का उल्लेख मिलता है जो उत्तरी ध्रुव पर ही संभव है।

(3) ऋग्वेद में जगह-जगह ध्रुव का वर्णन मिलता है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर तिलक ने यह धारणा इतिहास प्रेमियों के सम्मुख रखी। उनका कहना है कि 800 ई. पूर्व तक आर्य लोग उत्तरी ध्रुव पर ही रहे और जब वहाँ हिम प्रलय हुआ तो वे ईरान जाकर बस गए। उनके अनुसार हिम प्रलय के पूर्व उत्तरी ध्रुव की जलवायु अच्छी थी और आर्य लोग वहां अपने मनोनुकूल खाद्यान्न पैदा कर लेते थे।

मीमांसा-तिलक ने अपने मत का प्रतिपादन केवल साहित्य के आधार पर किया है और साहित्यिक वर्णन में यह आवश्यक नहीं कि केवल देखे हुए स्थान का ही वर्णन किया जावे। दूसरी बात यह है कि यदि आर्य लोग उत्तरी ध्रुव के निवासी होते तो सप्त सैन्धव को 'दैवकृत योनि' नहीं कहते। तिलक ने स्वयं उमेशचन्द्र विद्यारत्न के सामने स्वीकार किया कि उन्होंने मूल वेद नहीं पढ़े हैं केवल अंग्रजों द्वारा किये गये वेद भाष्य पढ़े हैं। आमि मूल वेद अध्ययन करि नाई। आमि साहब अनुवाद पाठ करिछा छे।

(मानेवर आदि जन्म भूमि पृष्ठ 124)

उत्तरी ध्रुव विषयक मान्यता के संबंध में तिलक ने लिखा है-It is clear that soma raw was extracted and perified at nights in the arctic. इसका प्रत्याख्यान करते हुए नारायण भवानी पावगी ने अपने ग्रन्थ आर्य वर्त्तातील आर्याची जन्मभूमि में लिखा है- कि उत्तरी ध्रुव में तो सोमलता होती ही नहीं सोमलता तो हिमालय पर्वत के एक भाग मुंजवान पर्वत पर होती है।

आर्यों का आदि देश भारत-इतिहास कारों की एक श्रेणी ऐसी भी है जो आर्यों को विदेशी नहीं मानकर भारतीय ही स्वीकार करती है। इस श्रेणी के विद्वानों की मान्यता है कि आर्य भारत में बाहर से नहीं आए। वे मूल रूप में यहीं रहते थे। डॉ. अविनाशचन्द्र दास, श्री गंगाधर झा, डी.एस. त्रिवेदी, डॉ. सम्पूर्णानन्द, डॉ. राजबलिपाण्डे के नाम इनमें उल्लेखनीय हैं। किन्तु वे भारत के विभिन्न प्रदेशों को इस हेतु नियत करते हैं। डॉ. अविनाशचन्द्र सप्त सिन्धु, राजबलि पाण्डेय 'मध्य प्रदेश' डॉ. एस.डी. त्रिवेदी कश्मीर तथा हिमालय प्रदेश को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं। डॉ. एस.डी. त्रिवेदी मुल्तान के पास देविका नदी के समीप का प्रदेश इसके लिए नियत करते हैं।

भारतीय इतिहासकारों के मत की पुष्टि में निम्न तर्क है-

(1) ऋग्वेद में जिस भौगोलिक स्थिति का वर्णन है वह सप्त सैन्धव प्रदेश में ही मिलती है।

(2) डॉ. अविनाशचन्द्र दास के अनुसार आर्यों की एक शाखा ऐसी थी जो अहुरमज्दा की उपासना करती थी और दूसरी अहिरमन की उपासक थी। कालान्तर में इन दोनों में संघर्ष हुए। अहुरमज्दा की उपासना करने वाले हार कर भागे और ईरान में जाकर बस गए। ईरानियों के धार्मिक ग्रन्थ जिन्द अवस्था में इसका वर्णन है।

(3) ऋग्वेद में पढ़ने से ज्ञात होता है कि आर्यों का ज्ञान सप्त सैन्धव तक ही सीमित था। अत: वे यहीं के निवासी थे।

(4) आर्यों ने सप्त सैन्धव को 'दैव कृत योनि' की संज्ञा दी है। इससे स्पष्ट है कि आर्यों का सप्त सैन्धव से अपार स्नेह था। इसीलिए कहा जाता है कि सप्त सैन्धव प्रदेश ही आर्यों का मूल निवास स्थान था।

(5) वेदों में यत्र-तत्र सप्त सैन्धव का गुणगान भी मिलता है।

(6) डॉ. राजबलि पाण्डेय मध्य प्रदेश वर्तमान उत्तर प्रदेश तथा बिहार प्रदेश को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं। अयोध्या और गया उनके मुख्य केन्द्र थे। उत्तरी पश्चिमी दरों में से होकर वे ईरान तथा अन्य देशों में पहुंचे।

(7) वेद परवर्ती साहित्य और पुराणों में सुरक्षित परम्पराएं इस बात की साक्ष्य हैं कि आर्य मध्य देश के निवासी थे।

(8) भारतीय साहित्य में कही भी इस बात के संकेत नहीं है कि आर्य भारत में बाहर से आए थे।

(9) भाषा विज्ञान के आधार पर भी भारत ही आर्यों का मूल निवास स्थान ठहरता है क्योंकि आर्य परिवार की भाषाओं में संस्कृत भाषा के शब्द यूरोपीय भाषाओं से अधिक है। इससे निश्चय है कि आर्य भारत के ही निवासी है।

मीमांसा-(1) यदि आर्य भारत के ही मूल निवासी होते तो वे सर्वप्रथम भारत का ही आर्यीकरण करते। ईरान तथा यूरोप न जाकर दक्षिणी भारत में जाकर वहाँ अपनी सभ्यता फैलाते।

(2) भाषा के आधार पर भी भारत को आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं मान सकते क्योंकि दक्षिण भाग की भाषाएं संस्कृत से अप्रभावित है।

(3) आर्यों के भारत में आने से पूर्व उत्तर भारत में द्रविड़ लोग निवास करते थे। इसका साक्ष्य बलूचिस्तान में बोली जाने वाली भाषा ब्राह्य हुई है।

(4) इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत में विदेशी से जातियां आई हैं परन्तु यहां से कोई भी जाति बाहर नहीं गई है। अत: आर्य भी यहाँ बाहर से आये हैं।

(5)प्रो. गाइल्स का कहना है कि वेदों में वर्णित समस्त वनस्पतियां भारत में उपलब्ध नहीं है अत: भारत आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं है।

(6) यदि आर्य भारत के ही निवासी थे तो वे इस उर्वर प्रदेश को छोड़ कर ईरान और यूरोप में क्यों गए।

(7) सिन्धु सभ्यता का आर्य सभ्यता से प्राचीन होना सिद्ध है। सिन्धु प्रदेश के मूल निवासियों के गावों के इतिहासकारों ने यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया है कि आर्य लोग यहां बाहर से आए हैं।

तिब्बत-स्वामी दयानन्द सरस्वती ने तिब्बत को आर्यो का मूल निवास स्थान माना है। उनके अनुसार महान् विस्फोट के बाद सृष्टि उत्पत्ति का कार्य प्रारम्भ हुआ। आकाश गंगाएं और सौर परिवार बने। पृथ्वी सूर्य से अलग हुई तब आग का गोला थी। पृथ्वी भी उन्हीं तत्वों से बनी है जिनसे सूर्य बना है। फिर धीरे-धीरे पृथ्वी ठंडी हुई। दूध पर जैसे थार बनती है वैसे इसका धरातल बना। फिर लाखों वर्षों तक वर्षा होती रही। पृथ्वी पानी में डूब गई। फिर धीरे-धीरे वर्षा कम हुई। पानी नीचे जाने लगा। पर्वतों का निर्माण हुआ। सबसे ऊँचा पर्वत हिमालय सबसे पहिले पानी से ऊपर उठा। सूखा धरातल बना। फिर इस पर वनस्पतियां उत्पन्न हुई। फिर

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-आर्यों का मूल निवास स्थान

जीवों की उत्पत्ति होने लगी। पहिले जल चर बने, फिर जल स्थल चर जीव बने, रेंगने वाले जीव बने, फिर पक्षी बने और अन्त में स्तनपायी जीव आए। मनुष्य सबके अन्त में उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार की स्थिति अफ्रीका में भी बनी वहाँ भी सृष्टि की उत्पत्ति हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में प्रश्नोत्तर शैली में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन किया है। उनके अनुसार मनुष्य की उत्पत्ति सर्वप्रथम तिब्बत के पठार पर हुई। प्रारम्भ में मनुष्य की एक ही जाति थी। उनके अनुसार ऋग्वेद में श्रेष्ठ पुरूषों को आर्य तथा दुष्टों को दस्यु कहा गया है। जब जन संख्या बढ़ गई और आर्यो व दस्युओं में संघर्ष होने लगा तथा पानी भी सप्त सैन्धव से नीचे चला गया तब नित्य के झगड़े से बचने के लिए आर्यों की एक शाखा हिमालय के दक्षिणी भाग में नीचे उत्तर कर गंगा-सिन्धु के मैदान में आ गई और दूसरी शाखा उत्तर-पश्चिम भाग से उतर कर ईरान और यूरोप की ओर चली गई। उस समय यहाँ कोई भी मनुष्य जाति निवास नहीं कर रही थी और न इस देश का कोई नाम ही था! आर्य लोग सृष्टि के प्रारम्भ में ही इस देश में आकर बस गए थे।

वेद के अनुसार आर्य नाम धार्मिक विद्वान् आप्त पुरूषों का तथा इसके विपरीत जनों का नाम दस्यु है। जब वेद में ऐसा बताया गया है तो फिर विदेशियों के कपोल कल्पित विवरण को विद्वान् लोग कभी नहीं मान सकते। किसी संस्कृत ग्रन्थ अथवा इतिहास में यह नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से आए। यहां के जंगलियों को जय करके इस देश के राजा हुए। फिर विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है। श्री प्रेम भिक्षु के अनुसार इस देश का नाम आर्यावर्त आर्यों के कारण ही है। यदि आर्य बाहर से आए थे तो पूर्व में इस देश का नाम क्या था? भारत के आदिवासियों की किसी भी पुस्तक में अथवा लोक कथा में भी यह वर्णन नहीं है कि आर्यों ने इन्हें हराकर जंगल में भगा दिया। अभी कुछ शिक्षित आदिवासियों ने अपना कुछ इतिहास लिखा है। वह भी अगस्त्य व कर्ण ऋषि से प्रारम्भ किया है। यदि आर्यों के पूर्व यहां द्रविड़ रहते थे तथा आर्यों ने इन्हें हराकर दक्षिण में भगा दिया तो दक्षिण में चन्दन तथा कपूर दो पदार्थ अधिक है। इनका नाम उनकी भाषा में क्या है?

आर्यो के तीर्थ स्थान मध्य एशिया में कहां पर हैं? भारतीय आर्यों की एक शाखा ईरान में रहती है। वहां के भूगोल में पढ़ाया जाता है कि कुछ हजार वर्ष पूर्व आर्य लोग हिमालय पर्वत से उतर कर यहां आए और यहां का जलवायु अपने अनुकूल पाकर यहीं बस गए। स्वामी दयानन्द के अनुसार आर्य लोग तिब्बत से उतर कर सप्त सिन्धु में बस गए। आर्य लोग आज भी मानसरोवर को तीर्थ मानते हैं। मानसरोवर के उत्तर में यमपुर था जहां यमराज शासन करते थे। पास ही कुबेर की राजधानी अलकापुरी थी। कैलाश पर्वत के उत्तर में इन्द्र की राजधानी अमरावती थी। संस्कृत के ग्रन्थों में इनका विस्तृत वर्णन है। तिब्बत में आज भी रूद्रोक नगर अनाज की बड़ी मण्डी है। रूद्र सूर्य के भाई थे और रूद्रोक उनकी राजधानी थी। तिब्बत में वर्तमान में भी बौद्धधर्मावलम्बी आर्य लोग रहते हैं। स्वामी दयानन्द की मान्यता का समर्थन जर्मन विद्वान् पांट और म्यूर ने किया है।

मैक्समूलर ने भी स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य को पढ़ने के बाद अपनी मध्य एशिया की मान्यता से हट कर कह दिया था कि आर्यो का मूल निवास स्थान यहीं कहीं एशिया में ही है और तिब्बत भी एशिया का ही एक भाग है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के मत का भारतीय इतिहासकार भी विरोध नहीं कर सकते हैं क्योंकि उन्होंने वैदिक वाङ्मय पर यहीं आकर लेखन कार्य किया था। फिर आर्य लोग जब तिब्बत से यहां आए तो रास्ते में चिन्ह बनाते आए जिससे कि उन्हें पुनः तिब्बत जाने में कष्ट न हो। हरिद्वार, केदारनाथ, बद्रीनाथ, मानसरोवर ऐसे ही स्थान है। महाभारत काल तक आयुर्वेद के विद्वानों की अधिकतर बैठकें तिब्बत में ही होती रही है। ऐसा महाभारत में वर्णन है। भारत पर जब कभी भी कोई बड़ा संकट उपस्थित होता था तब आर्य लोग शंकर के पास कैलाश नगरी में जाकर, इन्द्र के पास अमरावती में जाकर तथा ब्रह्मा व विष्णु की राजधानियों में जाकर जो सब तिब्बत में स्थित थी सहायता प्राप्त करते थे।

पृष्ठ 4 का शेष-पुष्ट व कर्मशील नारी...

परिजनों को भी इस का स्वाध्याय करावे। यह सब करने के लिए समग्र परिवार एक छत के नीचे मिलकर स्नेह पूर्वक रहते हुए वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय से अपने ज्ञान को सदा दीप्त करते रहें।

वेद ज्ञान को आत्मसात् कर

मन्त्र इस माध्यम से अति उत्तम उपदेश करते हुए कह रहा है कि हे देवी! इस वेद रूपी अमृत का तू उत्तम प्रकार से पान कर ले, इतनी उत्तमता से वेद ज्ञान को आत्मसात् कर ले तथा इस विद्या में भरपूर निपुणता प्राप्त कर ले, अन्यतम निपुणता प्राप्त कर कि इस विषय में तेरी प्रतिस्पर्धा करने वाला अन्य कोई न हो। तेरी इस निपुणता के समक्ष तो कोई ४४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का सेवन करने वाला विद्वान अथवा २४ वर्ष तक ब्रह्मचर्यव्रत का सेवन करने वाला कोई विद्वान भी न हो। इतना ही नहीं कि अन्य भी कोई न हो। वह तेरी प्रशंसा करने वाले तथा तेरे गुणों का गान करने वाले हों।

हम जानते हैं कि ब्रह्मचर्य व्रत के लिए ऋषियों ने जो कोटियाँ निर्धारित की हैं, उनमें सर्वोतम कोटि कम से कम ४४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का सेवन करने वाले को माना गया है। इस का भाव यह है कि जो ब्रह्मचारी ४४ वर्ष की आयु पर्यंत अपने इस व्रत का पालन करते हुए वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय में लगा रहे वह उत्तम श्रेणी में आता है। दूसरी श्रेणी २४ वर्ष तक स्वाध्याय करने वालों की होती है। इस श्रेणी को पाने वाले ब्रह्मचारी कम से कम २४ वर्ष तक निरंतर वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय में रत रहते हुए अपने ज्ञान को बढ़ाने में लगे रहते हैं।

इस प्रकार के उच्चकोटि के विद्वान भी जब इस देवी के प्रशंसक बन जाते हैं तो इस देवी की प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं रहता। इसलिए मन्त्र उपदेश कर रहा है कि अपने अध्यापन व उपदेशक का कार्य करते हुए सब स्त्री पुरुष इस गृह स्थान पर प्रतिष्ठित हों तथा तेरी इस विद्वता के कारण सब प्रकार के ब्रह्मचारी भी सब दिशाओं में तेरे ज्ञान की, तेरी विद्वता की चर्चा करते हुए तेरे यश को सब दिशाओं में दूर-दूर तक ले जावें। इस प्रकार सब दिशाओं में तेरी प्रशंसा के गीत गाये जावें।

स्त्री शिक्षा के आदर्श के विषय के आधार पर यह मन्त्र अत्यंत उत्तम माना गया है। स्त्री को माता माना गया है तथा माता को निर्माता कहा गया है। माता संसार की संतानों को उत्तम ज्ञान देते हुए उन्हें उत्तम बनाने का कार्य करती है। इस कारण ही उसे निर्माता कहा गया है। यह गृहिणी बनक, नहीं यह उत्तम गृहिणी बनकर अपने कुल की, अपने परिवार की न केवल उन्नति करने वाली होती है अपितु यह इस कुल की वृद्धि का भी सदा विशेष रूप से ध्यान रखती है। इस प्रकार वेदादेश के अनुसार नारी की शिक्षा भी आवश्यक होती है। एक शिक्षित नारी ही कुल को आगे ले जा सकती है, उन्नति की और बढ़ा सकती है। अतः नारी शिक्षा को वेद विशेष रूप से महत्त्व देता है।

आर्य समाज बंगा का 36वां वार्षिकोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर्य समाज बंगा, जिला शहीद भगत सिंह नगर पंजाब का 36वां वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद शतक यज्ञ 30 नवम्बर 2017 वीरवार से 3 दिसम्बर 2017 तक रविवार तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस उत्सव में स्वामी विदेह योगी जी कुरूक्षेत्र, डॉ. स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती मथुरा, श्री सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं श्री उपेन्द्र आर्य भजनोपदेशक चण्डीगढ से पधार रहे हैं, जो अपने मुखारविन्द से जीवन कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्याम लाल आर्य मन्त्री आर्य समाज बंगा

आर्य समाज फोकल प्वाईंट का 39वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज मन्दिर फेस-1, फोकल प्वाईंट, जमालपुर लुधियाना का 39वां वार्षिक उत्सव दिनांक 17 नवम्बर शुक्रवार से 19 नवम्बर 2017 रविवार तक बड़े ही उत्साहपूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी जी प्राचार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार मुख्य वक्ता एवं श्री राजेश अगर प्रेमी जी जालन्धर भजनोपदेशक होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित पं. महेश विद्या वाचस्पति जी होंगे। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर पर अपने परिवारों एवं इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

महेन्द्र प्रताप आर्य महामन्त्री आर्य समाज फोकल प्वाईंट

पं जगदीश जन्द्र ''वसु'' जी को हिन्दी रक्षा आन्दोलन 1957 के स्वतन्त्रता सेनानी की उपाधि से अलंकृत

आर्य जगत् के वैदिक विद्वान वेदोपदेशक पं. जगदीश चन्द्र ''वसु'' को सन् 1957 के आर्य समाज के द्वारा संचालित ''हिन्दी रक्षा आन्दोलन'' के अन्तर्गत कारागार भोगने तथा मातृभाषा हिन्दी की रक्षा के लिए अनेक यातनाएँ सहन करने के कारण हरियाणा सरकार द्वारा उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करके 15 अगस्त, 2017 को पानीपत के आर्य. पी. जी. कॉलेज के विशाल प्रांगण में स्वतन्त्रता दिवस के महान अवसर पर ''स्वतन्त्रता-सेनानी'' की गौरवपूर्ण उपाधि से आर्य श्री कर्णदेव कम्बोज, खाद्यमनी द्वारा अलंकृत कर सम्मानित किया गया।

पं. जगदीश चन्द्र वसु का जन्म पं. ब्रह्मानन्द शर्मा तथा पूज्या माता चन्दा देवी शर्मा के घर 8 अगस्त 1938 में ग्राम कुरली, जिला बुलन्दशहर, उ.प्र. में हुआ। आपके जीवन में बचपन से ही अपने देश के प्रति आस्था तथा भक्ति थी। आपने अपना सम्पूर्ण जीवन वेद प्रचार, आर्य समाज तथा महर्षि देव दयानन्द के सिद्धान्तों-मान्यताओं के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया। आप एक उच्च कोटि के विद्वान, उपदेशक, वैदिक प्रवक्ता तथा लेखक हैं। आप सन् 1959 से निरन्तर प्रचार तथा लेखन कार्य में रत हैं।

आप सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली के प्रधान शिक्षक रहें। आपने हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि में असंख्य युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा। आपने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन में पूर्ण सहयोग दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, पंजाब एवं महाराष्ट्र में महोपदेशक के पद पर रहते हुए प्रचार कार्य किया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं उपसभा हरियाणा में सहायता तथा वेद प्रचार अधिष्ठाता के पद पर 25 वर्ष तक प्रचार कार्य किया। हिन्दी रक्षा आनन्दोलन 1957 में एवं सन् 1967 में गौरक्षा आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेकर तीन बार कारावास की सजा काटी और यातनाएँ सही। परन्तु मातृभाषा हिन्दी तथा गौ माता का अपमान नहीं होने दिया।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में हिन्दी भाषा की रक्षा हेतु आपको हरियाणा सरकार की ओर से लघु सचिवालय में 29 सितम्बर 2017, शुक्रवार को राज्य शिक्षा मन्त्री माननीय श्री अनिल विज जी ने स्मृति चिन्ह, शाल एवं पुस्तिका आदि भेंट कर सम्मानित किया। पत्रकार बन्धुओं ने अपने समाचार पत्रों में इस समाचार को स्थान देकर न केवल आपका ही सम्मान किया अपितु भारत के उन लाखों-करोड़ों राष्ट्र भक्तों तथा शहीदों का भी सम्मान किया जिन्होंने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

पं. जगदीश चन्द्र ''वसु'' जी ने लगभग 30 पुस्तकों का लेखक करके वैदिक साहित्य की समाज सुधारक परम्परा का निर्वाह करके आर्यत्व का परिचय दिया है। आपकी शिक्षा-दीक्षा निम्नलिखित स्थानों पर हुई-

1. चण्डी संस्कृत महाविद्यालय, हापुड, उ.प्र.

2. सर्वदानन्द साधू आश्रम संस्कृत महाविद्यालय, हरदुआगंज, अलीगढ़, उ.प्र.

3. श्री दयानन्द उपदेश महाविद्यालय यमुना नगर, हरियाणा

4. दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार, हरियाणा के आप योग्य स्नातक हैं।

मान्य श्री वसु जी हिन्दी आन्दोलन के साथ-साथ समाज के सजग प्रहरी, प्रबुद्ध विद्वान हैं और समाज में दायरा विकसित किए हुए जाना-माना चेहरा और जन संघ से जुड़े पुराने व्यक्तित्व के धनी हैं। आपको भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मान्य श्री अटल बिहारी बाजपेयी एवं मुम्बई, महाराष्ट्र के पूर्व पुलिस कमिश्नर तथा वर्तमान में केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी आर्य द्वारा तथा अन्यत्र 27 बार सम्मानित किया जा चुका है। आपने अपने अथक परिश्रम से पानीपत में 7 फरवरी सन् 1987 को आर्य समाज देसराज कालोनी की स्थापना की जहाँ आपके नेतृत्व में 30 वर्षों से वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह विशेष पर्व आदि उत्साहपूर्वक मनाए जाते हैं।

महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण दिवस तथा दीपावली पर्व महायज्ञ करके मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग फिरोज़पुर शहर में महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण दिवस तथा दीपावली पर्व वैदिक रीति से मनाया गया। श्री योगेन्द्र शास्त्री जी विशेषरूप से फिरोज़पुर में यज्ञब्रह्मा बनने के लिये आये। उन्होंने बहुत ही श्रद्धापूर्वक महायज्ञ करवाया तथा प्रवचन भी साथ-साथ किये तथा महर्षि दयानन्द जी के जीवन काल बारे विस्तार से बताया तथा दीपावली किस तरह से प्रदूषण रहित मनानी चहिये आने वाली पीढ़ी को इन दोनों बातों का पता लगना चाहिये। किस तरह से महान् पुरुष महर्षि दयानन्द जी ने आज के दिन बलिदान दिया तथा दीपावली क्यों मनाई जाती है।

आज चार यजमान जिनके नाम श्री सर्वहितेषी भटिया, श्री दीपक मल्होत्रा, श्री अशीष मल्होत्री, तथा श्री कुलदीप मैनी सभी यजमान अपनी-अपनी पत्नीयो सहित यजमान पद पर बैठे। सभी ने वैदिक रीति से बहुत ही अच्छे ढंग से यज्ञ किया।

श्री डी आर गोयल, डा. विनोद मेहता श्री शान्ति भूषण शर्मा जी, गीता मेडम, श्रीमति राज छाबड़ा, सहित बहुत से गणमान्य सदस्यों ने भाग लिये अन्त में शान्तिपाठ करके सभी को प्रसाद तथा मोमबत्ती वितरत की गई।

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज दीनानगर की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। इस वार्षिक उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री, भजनोपदेशक पंडित सतीश सुमन जी, एवं जालन्धर से पधारे श्री एस. एस गुलशन जी ने शिरकत की। सर्व प्रथम उत्सव की शुरुआत दिनांक 13 अक्तूबर को श्रद्धेय स्वामी सदानन्द जी महाराज जी की अध्यक्षता में एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसमें नगर की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसीपल, स्टाफ एवं छात्र छात्राओं ने भाग लिया। सारा नगर ओ३म् के जयकारों एवं महर्षि दयानन्द की जय से गूंज उठा। रात्रि को 13 से 18 अक्तूबर तक आर्य समाज मन्दिर में कार्यक्रम होता रहा, नगर के गणमान्य व्यक्ति एवं दयानन्द मठ के सभी ब्रह्मचारी एवं शास्त्री जन प्रतिदिन कार्यक्रम में आते रहे। नगर की सभी शिक्षण संस्थाओं में, प्रतिदिन जैसे एस. एम एम कालेज में आर्य युवक महासम्मेलन, बी. एड कालेज में वेद सम्मेलन एस. एस आई एक टी में स्वामी सर्वानन्द निवार्णोत्सव मनाया गया। पूरा सप्ताह नगर में आर्य समाज की जय जय कार होती रही। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूरे नगर निवासियों ने भरपूर योगदान दिया, सबसे ज्यादा योगदान आर्य शिक्षण संस्थाओं का रहा।

दिनांक 19 अक्तूबर दीपावली वाले दिन स्कूलों के बच्चों की भाषण प्रतियोगिता आर्य समाज मन्दिर में करवाई गई, विषय था, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं सन्त शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द सरस्वती। प्रथम द्वितीय एवं तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कार दिए गए। इससे पहले सभी स्कूलों में वैदिक प्रश्नोतरी प्रतियोगिता भी करवाई गई उनमें भी प्रथम द्वितीय तृतीय आने वाले बच्चों को इनाम दिए गए। इस कार्यक्रम को अकल बनाने के लिए आर्य समाज के सभी कार्यकत्ताओं में बहुत मेहनत की। आर्य समाज के प्रधान रघुनाथ सिंह शास्त्री ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर आर्य समाज के मन्त्री रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, अरून विज, प्रिंसीपल गन्धर्वराज महाजन, ईश्वर भल्ला, वेद प्रकाश ओहटी, श्री यतीन्द्र जी शास्त्री, मनोहर सैन अहोरी, रण्जीत शर्मा, सरदारी लाल, दिनेश सिंह, एवं नगर के गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। यह पूरा कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। **-मन्त्री रमेश महाजन आर्य समाज दीनानगर**

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक दिनांक 11.11.2017 को सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर में सम्पन्न हुई। इस बैठक में दिनांक 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में हुये आर्य महासम्मेलन की समीक्षा की गई और आगामी महासम्मेलन करने के सम्बन्ध में विचार किया गया। श्री सुदर्शन कुमार शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नेतृत्व में नवांशहर में हुये आर्य महासम्मेलन की सफलता पर उन्हें सम्मानित किया गया और उनके साथ सभामहामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, आर्य महासम्मेलन के संयोजक श्री विनोद भारद्वाज एवं श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल को भी इसके लिये सम्मानित किया गया।

आर्य महासम्मेलन के सफल आयोजन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 11.11.2017 दिन शनिवार को सभाप्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को गुलदस्ता देकर सम्मानित करते हुये सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, उप प्रधान श्री मुनीष सहगल, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज एवं संयोजक आर्य महासम्मेलन श्री विनोद भारद्वाज।

आर्य महासम्मेलन के सफल आयोजन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 11.11.2017 दिन शनिवार को सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, सभा उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, उप प्रधान श्री स्वतंत्र कुमार जी, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी, सभा मंत्री श्री विनोद भारद्वाज।

आर्य महासम्मेलन के सफल आयोजन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 11.11.2017 दिन शनिवार को सभामंत्री एवं आर्य महासम्मेलन के संयोजक श्री विनोद भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, सभा उप प्रधान श्री नरेश शर्मा जी, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी।

आर्य महासम्मेलन के सफल आयोजन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 11.11.2017 दिन शनिवार को श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी अधिष्ठाता साहित्य विभाग को सम्मानित सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, सभा उप प्रधान श्री नरेश शर्मा जी, उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, उप प्रधान श्री स्वतंत्र कुमार जी, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट।

अन्तरंग सभा की बैठक की अध्यक्षता करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी। उनके साथ बैठे हैं उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, उप प्रधान श्री नरेश शर्मा जी। कार्यवाही में अपने विचार रखते हुये सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज

अन्तरंग सभा की कार्यवाही में भाग लेते हुये श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, श्री विनोद भारद्वाज जी।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।